

क्या चूहामार दवाइयां सुरक्षित हैं?



चूहामार दवाइयों का घरेलू उपयोग तो होता ही है मगर इनका बड़े पैमाने पर उपयोग उत्तर-पूर्वी भारत में उस समय किया जाता है जब बांस फूलता है। बांसों का फूलना जीव विज्ञान की एक पहेली ही है। बांस पर फूल कई सालों में एक बार आते हैं, बड़े पैमाने पर आते हैं और इसके बाद बांस का पेड़ नष्ट हो जाता है। इसके अलावा जिस साल बांस के जंगल में फूल आते हैं, चूहों की तादाद बहुत बढ़ जाती है। ये चूहे आसपास की फसल को तबाह कर देते हैं। फसलों को तबाह करने के अलावा ये चूहे कई रोगों के वाहक भी होते हैं।

बांस फूलने के साथ चूहों की इस समस्या से निपटने के लिए चूहामार रसायनों का उपयोग भारी मात्रा में किया जाता है। कृषि विभाग व अन्य सम्बंधित विभाग इस अवधि में यहां किसानों को चूहामार दवाइयों का वितरण खुले हाथों करते हैं। यह उपाय काफी कारगर लगता है मगर इसके दूरगामी पर्यावरणीय प्रभावों तथा स्वास्थ्य पर प्रभावों का व्यवस्थित अध्ययन नहीं हुआ है।

करंट साइन्स के हाल के अंक में इस समस्या का जिक्र करते हुए उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय विज्ञान व टेक्नॉलॉजी संस्थान के सदानंद और उनके साथियों ने बताया है कि ये चूहामार रसायन कई तरह के प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। जैसे ये अन्य प्रजातियों को भी प्रत्यक्ष रूप से नष्ट कर सकते हैं। इसके अलावा चूहों के माध्यम से ये खाद्य जूखला में प्रवेश करके पूरे परितंत्र को प्रभावित कर सकते हैं। उत्तर-पूर्वी

भारत के कई इलाकों में चूहे भोजन का हिस्सा हैं और चूहामार दवाइयों से मारे गए चूहे भी भोजन में उपयोग किए जाते हैं।

सदानंद व साथी बताते हैं कि 2004 से 2008 के दरम्यान मिज़ोरम में मूलतः एल्युमिनियम फॉस्फाइड, जिंक फॉस्फाइड, क्यूमाटेट्रालिल और ब्रोमोडायोलोन का उपयोग किया गया था। वैसे तो माना जाता है कि ये रसायन जैव विघटनशील हैं और इनका ज़्यादा असर नहीं होता मगर कई कारणों से इन्हें पर्यावरण-मित्र नहीं माना जा सकता।

एल्युमिनियम फॉस्फाइड और जिंक फॉस्फाइड दो प्रमुख चूहामार रसायन हैं। इनसे बनने वाले पदार्थों को विषैला माना गया है। ये दोनों हवा की नमी और पेट में पाए जाने वाले तेज़ाब से क्रिया करके फॉस्फीन नामक गैस बनाते हैं। यह अत्यंत विषैली गैस है।

क्यूमाटेट्रालिल खून का थक्का बनने से रोकता है। इसके बार-बार संपर्क से शरीर में थक्का बनने की क्रिया स्थायी रूप से प्रभावित हो सकती है। ऐसा होने पर रक्त स्राव जैसी समस्या सामने आ सकती है। इसी प्रकार से ब्रोमोडायोलोन विटामिन के की क्रिया में बाधा पहुंचाता है। यह समस्त स्तनधारियों के लिए घातक है।

सदानंद व साथियों का मत है कि चूंकि ये सारे रसायन सिर्फ चूहों के लिए नहीं बल्कि अन्य जंतुओं के लिए भी घातक हैं, इसलिए इनका उपयोग करने से पहले अन्य तकनीकों को आजमाया जाना चाहिए। (**स्रोत फीचर्स**)